

ईस्ट इंडिया कंपनी का बचाव

18वीं सदी का एक ऐतिहासिक और आर्थिक
विश्लेषण - एकाधिकार, राज्य और सत्ता की कहानी

“An Essay on the East-India Trade” पर आधारित

ledged by all and
not be an chief
this kingdom, nor
perhaps, when it
ouly attended to,

Every person em



CONFIDENTIAL BRIEFING
विषय: वाणिज्य और राज्य शक्ति
(Commerce & State Power)

अपराधशास्त्रीय अंतर्दृष्टि

द्वारा
डॉ. मृदुल श्रीवास्तव

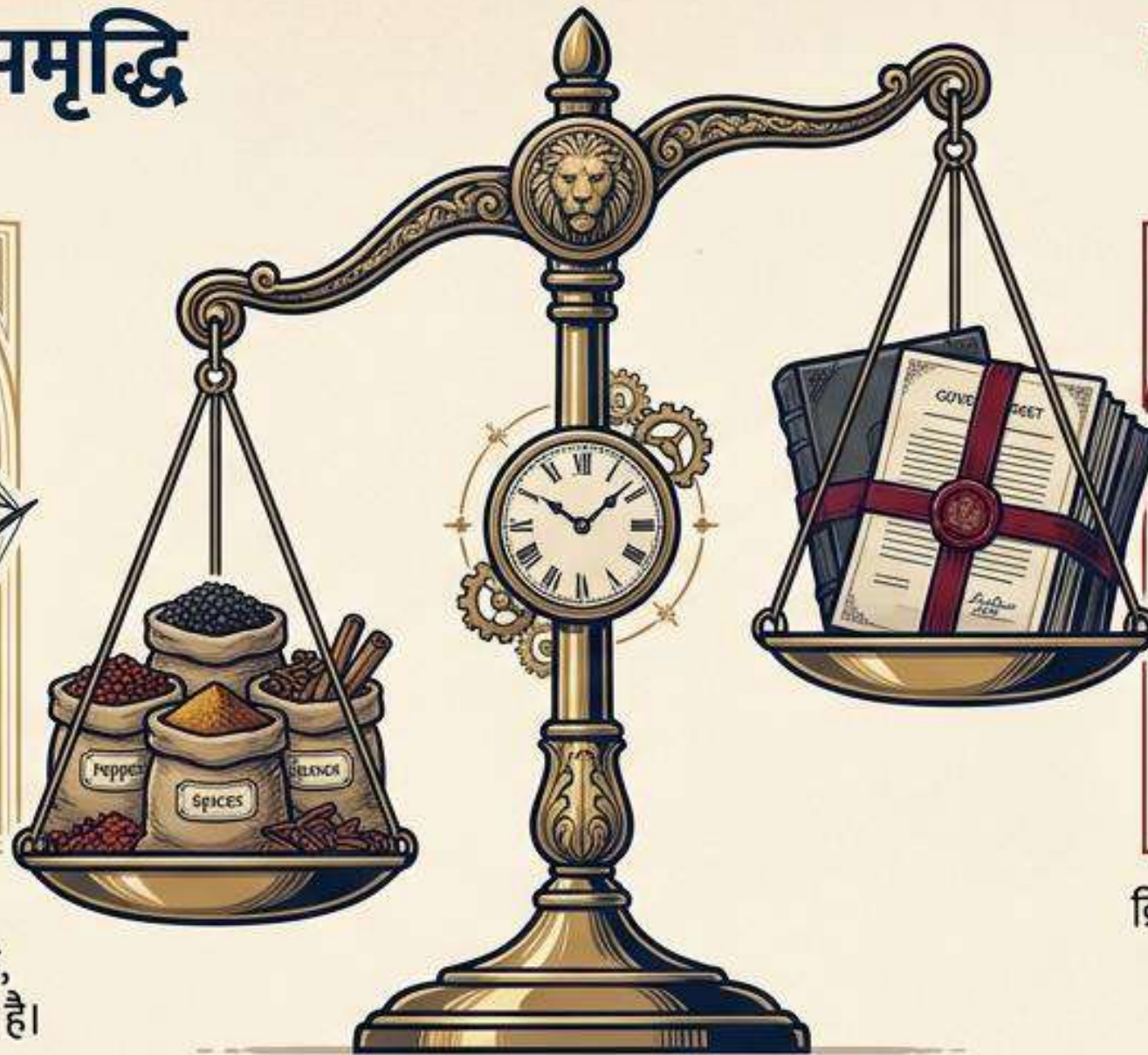
18वीं सदी के ऐतिहासिक निबंध पर
आधारित एक विश्लेषणात्मक रिपोर्ट।



अपार सफलता और समृद्धि



कंपनी ने भारत में अपार संपत्ति और व्यापारिक एकाधिकार प्राप्त कर लिया है, जिससे ब्रिटिश अर्थव्यवस्था फल-फूल रही है।



मंत्रालयी हस्तक्षेत्र



ब्रिटिश सरकार (राजकोष) कंपनी के लाभांश (dividends) पर रोक लगा रही है और क्षेत्रीय राजस्व में हिस्सा मांग रही है।



"व्यावसायिक व्यापार सरकारी नियंत्रण या प्रतिबंध के तहत कभी नहीं पनप सकता।"
लेखक का मुख्य तर्क: कंपनी की संपत्ति को राज्य द्वारा ज़ब्त करना ब्रिटिश साम्राज्य के पतन का कारण बनेगा।

	डच मॉडल (The Ideal)	फ्रांसीसी मॉडल (The Warning)	ब्रिटिश मॉडल (The Reality)
State Policy	पूर्ण संप्रभुता और बिना शर्त राज्य समर्थन।	मंत्रियों का निरंतर हस्तक्षेप और नियंत्रण।	सफल शुरुआत, लेकिन अब मंत्रियों के लालच और अविश्वास का शिकार।
Primary Motive	राष्ट्रीय संपत्ति के रूप में वाणिज्यिक विकास।	राजकोष को भरने का साधन।	वाणिज्य और राज्य करों के बीच संघर्ष।
Outcome	अटूट सफलता और एकाधिकार।	दिवालियापन और विफलता।	अस्तित्व का संकट।

एक ईस्ट इंडिया कंपनी की सफलता पूरी तरह से उसकी घरेलू सरकार की प्रकृति पर निर्भर करती है।

The Imperial Ledger

States General (डच सरकार)

1602 में प्रतिस्पर्धी व्यापारियों को
एकजुट किया। कंपनी के अधिकारों को
राज्य का अधिकार माना।

Foreign Policy

स्पेन के साथ शांति वार्ता (1609) में कंपनी
के अधिकारों को प्राथमिकता दी। स्पेनिश
मांगों के बावजूद, डच सरकार ने कंपनी के
समर्थन को एक अनिवार्य शर्त माना।

The Company

भारत और ईस्ट इंडीज में पूर्ण
संप्रभुता। बटाविया (Batavia) के
गवर्नर को शाही वैभव के साथ पेश
किया गहीं किया।

Non-Interference

राज्य ने भारी कर्ज और युद्धों के बावजूद
कभी भी कंपनी के निजी मुनाफे (160 वर्षों
तक औसतन 24%) पर कब्जा नहीं किया।

राष्ट्रीय लाभ के
रूप में व्यापार

The Fall of the French Model

1604 - Henry IV

पहली कंपनी की स्थापना, लेकिन व्यापारियों के बीच विभाजन के कारण विफल।

1611 - Louis XIII

नई कंपनी, प्रारंभिक सफलता लेकिन जल्द ही पतन। महान कार्डिनल रिशेल्यू (Cardinal Richelieu) का प्रयास भी नाकाफी।

Colbert's Era
(Louis XIV)

प्रसिद्ध मंत्री कोलबर्ट ने 60 लाख लिवर (livres) के फंड के साथ कंपनी को पुनर्जीवित किया।

The Fatal Flaw
(The Collapse)

कोलबर्ट की मृत्यु के बाद, नए मंत्रियों ने शाही राजस्व बढ़ाने के लिए कंपनी का इस्तेमाल किया। 1719 में एक शाही आदेश (Edict of Union) द्वारा, कंपनी को 'सिस्टम' का हिस्सा बना दिया गया और यह एक मंत्रालयी, न कि व्यावसायिक संस्था बन गई।

राज्य की शक्ति से व्यापार को फलने-फूलने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, यदि मंत्री लगातार उसमें हस्तक्षेप करें।

The Imperial Ledger



1602 - महारानी एलिजाबेथ

दिसंबर 1602 में कई व्यापारियों को विशेष विशेषाधिकार के साथ चार्टर प्रदान किया गया। केवल 72,000 पाउंड की प्रारंभिक पूंजी।



राजा जेम्स I

व्यापारिक सफलताओं को देखकर, राजा जेम्स ने न केवल चार्टर की अवधि बढ़ाई, बल्कि इसे स्थायी (perpetual) बना दिया।



नौसेना का जन्म

कंपनी ने 1200 टन का एक विशाल जहाज बनाया। यह इंग्लैंड में बना पहला इतना बड़ा जहाज था।



ईस्ट इंडिया कंपनी ने केवल व्यापार नहीं किया; उन्होंने अपने उदाहरण और वाणिज्य से ब्रिटिश नौसेना की नींव (Foundation of the Navy) रखी।

The Imperial Ledger

द डच राइवलरी

डच, जिन्हें अंग्रेजों ने विनाश से बचाया था,
ईस्ट इंडीज में शक्तिशाली हो गए।
मसाला व्यापार (Spice Trade) पर एकाधिकार
के लिए उन्होंने क्रूर तरीके अपनाए।

राज्य की विफलता

अम्बोयना नरसंहार (Amboyna Massacre):
डच द्वारा अंग्रेजों की क्रूर हत्या।

राजा जेम्स और राजा चर्ल्स I से पर्याप्त
समर्थन की कमी।

इसके विपरीत, राजा चर्ल्स ने सर विलियम कर्टेन को
व्यापार करने की अनुमति देकर कंपनी को और कमजोर
किया, जिसके जहाज डच द्वारा डुबो दिए गए।

अंततः, संसद और प्रोटेक्टर (Cromwell) ने डचों को बार-बार हराकर
85,000 पाउंड का हर्जाना वसूला, जिससे न्याय की स्थापना हुई।

राष्ट्र की संपत्ति में अभूतपूर्व वृद्धि

deemed 25 millions,
e gained 887 millions,
reflect upon economy,
and the trade and commerce of

भूमि का लगान (Land Rents)



कंपनी से पहले:
6 मिलियन पाउंड/वर्ष

वर्तमान अनुमान:
25 मिलियन पाउंड/वर्ष

कुल राष्ट्रीय संपत्ति (Total National Wealth)



कंपनी से पहले: 72
मिलियन पाउंड (भूमि)
+ 17 मिलियन पाउंड
(सोना/चांदी/स्टॉक)

वर्तमान अनुमान: 887 मिलियन पाउंड (चूँकि देश में कोई सोने/चांदी
की खदानें नहीं हैं, यह पूरी वृद्धि व्यापार के कारण है)।

स्वयं कंपनी के मुनाफे
की तुलना में, घरेलू
निर्माताओं,
दुकानदारों और
ज़मींदारों को इस
व्यापार से चार गुना
अधिक लाभ
मिलता है। कंपनी
के बिना, यह पूंजी
चीन या अन्य देशों
में चली जाती।



deemed 25 millions, while they stored the
gained 887 millions wit the presentchinn of cuber
trade and commerce. In the ecium cudioate of

The Imperial Ledger

"जो भी राष्ट्र ईस्ट इंडिया व्यापार के एक बड़े हिस्से पर नियंत्रण रखता है, वह आनुपातिक रूप से नौसेना शक्ति (maritime power) प्राप्त करता है।"

1. हिब्रू,
फोनीशियन,
मिस्र और रोमन
→ सबसे बड़ी
समुद्री शक्ति।

2. वेनिस और
जेनोआ
→ व्यापार के दौरान
नौसैनिक शक्ति।

3. पुर्तगाली
→ केप ऑफ गुड
होप के मार्ग से यूरोप
की सबसे दुर्जय
समुद्री शक्ति बने।

4. डच
→ पुर्तगाल को
विस्थापित
किया।

महारानी एलिजाबेथ के समय ब्रिटिश नौसेना में केवल 13 जहाज थे। आज यह यूरोप में सर्वोच्च है। यदि ब्रिटेन ईआईसी व्यापार खो देता है, तो उसकी नौसेना का पतन निश्चित है।

‘The Imperial Ledger’

भारत में कंपनी की हालिया सफलताओं ने एक तेज़-तर्रार प्रशासन की नज़र अपनी ओर खींच ली है। अखबार और पर्चे कंपनी के खिलाफ भ्रामक आरोप फैला रहे हैं।

नैतिक आरोप: कंपनी ने भारत के 'वैध राजकुमारों' को उनके जन्मसिद्ध अधिकार और विरासत से लूट लिया है।



आर्थिक आरोप: कंपनी द्वारा भारत में अर्जित क्षेत्रीय राजस्व (Territorial Revenue) अवैध है। यह सारा धन और क्षेत्र जनता (The Public) का होना चाहिए, और कंपनी को पिछले युद्ध के खर्चों की भरपाई करनी चाहिए।

"झूठे तथ्यों पर आधारित अधिकार के दावे।"

रक्तपात और सत्ता हथियाने का क्रम

Imperial Ledger

मुग़ल साम्राज्य: मूल रूप से नवाब केवल मुग़ल सम्राट द्वारा नियुक्त वायसराय या अधिकारी थे। मुग़ल साम्राज्य के कमज़ोर होने पर इन्होंने राजस्व पर कब्ज़ा कर लिया।

सौफ़राज़ खान: बंगाल, बिहार और उड़ीसा का नवाब। अत्यधिक विलासिता में डूबा हुआ।

अलीवर्दी खान (The Usurper)
एक पूर्व सेवक जिसने छल और सैन्य कौशल से सौफ़राज़ खान को युद्ध में मार डाला और तीनों प्रांतों पर अवैध कब्ज़ा कर लिया।

सिराज-उद-दौला (The Tyrant)
अलीवर्दी का क्रूर पोता। कलकत्ता में अंग्रेजों पर इसके अत्याचार वर्णन करने योग्य नहीं थे।

लॉर्ड क्लाइव ने सिराज-उद-दौला को हराकर कंपनी को पुनः स्थापित किया।

निष्कर्ष: ईआईसी ने किसी 'वैध राजा' को नहीं लूटा, बल्कि क्रूर और अवैध सत्ता हथियाने वालों (Usurpers) को उखाड़ फेंका।

फ्रांसीसी राज्य का उपयोग (The French Threat)

- फ्रांसीसी कंपनी एक व्यापारिक संस्था नहीं, बल्कि राज्य का एक सैन्य यंत्र थी।
- उद्देश्य भारतीय तटों पर ब्रिटिश व्यापार को नष्ट करना था।
- 1744 के युद्ध में उन्होंने ब्रिटिश बस्तियों पर भारी सेना भेजी थी।

ईआईसी का योगदान (Company's Military Service)

- सरकार ने कंपनी की मदद की, लेकिन कंपनी के बलों ने भी समान रूप से लड़ाई लड़ी।
- मद्रास की रक्षा की और पांडिचेरी (Pondicherry) जैसी फ्रांसीसी बस्तियों को नष्ट किया।
- कंपनी की सेनाओं ने मनीला (Manilla) पर कब्जा करने में राज्य की मदद की।

Balance

कर और सीमा शुल्क के रूप में राज्य को प्रति वर्ष 2 मिलियन पाउंड देकर, कंपनी ने युद्ध के दौरान सरकार द्वारा किए गए किसी भी खर्च की पूरी तरह से भरपाई कर दी है।

The Financial Reality

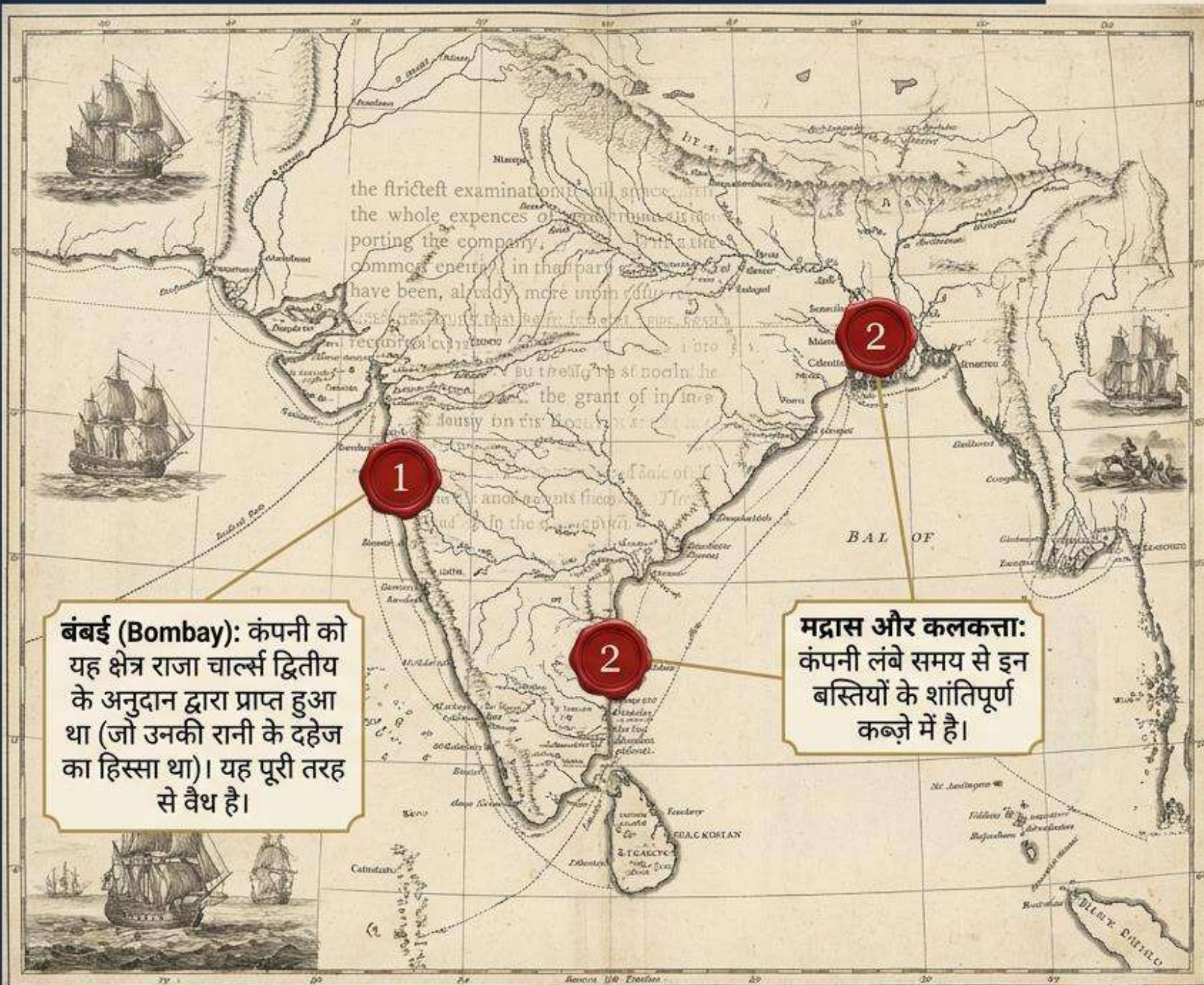
इन क्षेत्रों और अन्य राजस्वों से कंपनी को प्रति वर्ष लगभग **400,000** पाउंड प्राप्त होते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य: यह राशि 63 मिलियन पाउंड के राष्ट्रीय ऋण (National Debt) के ब्याज का भुगतान करने के बराबर है।

महत्वपूर्ण तथ्य: यह राशि 63 मिलियन पाउंड के राष्ट्रीय ऋण (National Debt) के ब्याज का भुगतान करने के बराबर है।

Key Legal Principle

कंपनी की संपत्ति उतनी ही पवित्र (sacred) है जितनी इंग्लैंड में किसी भी नागरिक की निजी संपत्ति



British Empire

ऐतिहासिक साक्ष्य

उच्च सफलता (स्वतंत्रता) बनाम फ्रांसीसी पतन (सरकारी हस्तक्षेप)। वाणिज्यिक उद्यम केवल राज्य के संरक्षण में पनपते हैं, राज्य के नियंत्रण में नहीं।

आर्थिक अनिवार्यता

भूमि के मूल्य में 4 गुना वृद्धि, और वैश्विक नौसेना शक्ति का आधार। ईआईसी के बिना ब्रिटेन अपनी नौसैनिक और आर्थिक सर्वोच्चता खो देगा।

कानूनी अधिकार

निजी संपत्ति की पवित्रता और नवार्बों की अवैधता। क्षेत्र और राजस्व पर कंपनी का अधिकार वैध और न्यायसंगत है।

हस्तक्षेप का अर्थ है पतन (To appropriate EIC wealth for the state is to invite the ruin of the British Empire).





अतीत का आईना, वर्तमान के लिए सबक (A mirror of the past, a lesson for the present)

यह निबंध 18वीं सदी की एक उत्कृष्ट पैरवी (lobbying) का उदाहरण है। यह दर्शाता है कि कैसे कॉर्पोरेट एकाधिकार ने:

1. उपनिवेशवाद (colonialism) और क्षेत्रीय विजय को न्यायसंगत ठहराया।
2. अपनी निजी व्यावसायिक सफलता को सीधे राष्ट्रीय अस्तित्व और नौसेना शक्ति से जोड़कर, राज्य की निगरानी (oversight) से स्वतंत्रता की मांग की।



जब राज्य और वाणिज्य आपस में टकराते हैं, तो इतिहास स्पष्ट चेतावनी देता है—जिसने व्यापार पर नियंत्रण किया, उसने दुनिया पर शासन किया; लेकिन जिसने व्यापार का गला घोंटा, उसने अपना ही साम्राज्य नष्ट कर लिया।

स्वर्ण नियम: व्यापार और सत्ता का संघर्ष

वाणिज्यिक
स्वतंत्रता



सरकारी नियंत्रण

यह अनुभव पर आधारित सत्य है कि
वाणिज्यिक व्यापार कभी भी सरकारी नियंत्रण
या प्रतिबंध के तहत फल-फूल नहीं सकता।

वाणिज्य राज्य की शक्ति का इंजन है, लेकिन तभी जब इसे
मंत्रियों के हस्तक्षेप से मुक्त रखा जाए।

तीन साम्राज्यों की कहानी: एक तुलनात्मक विश्लेषण

	 डच	 फ्रांसीसी	 अंग्रेज
राज्य का समर्थन	पूर्ण और निरंतर	अत्यधिक और प्रतिबंधात्मक	परिवर्तनशील
वाणिज्यिक स्वायत्तता	पूर्ण संप्रभुता	मंत्रियों के अधीन	संसदीय चार्टर द्वारा सुरक्षित
अंतिम परिणाम	अपार सफलता और नौसैनिक शक्ति	दिवालियापन और विशेषाधिकारों की समाप्ति	वैश्विक प्रभुत्व

डच मॉडल: स्वायत्तता से संपन्नता



1602 में 'स्टेट्स जनरल' (States General) द्वारा एकाधिकार प्रदान किया गया। भारत में पूर्ण संप्रभुता।



युद्धों और भारी कर्ज के बावजूद, राज्य ने कभी भी कंपनी के मुनाफे पर कब्जा नहीं किया।



निजी संपत्ति का पूर्ण सम्मान।



160 वर्षों तक औसतन 24% वार्षिक लाभांश।

डच यह भली-भांति समझते थे कि कंपनी की सफलता ही राष्ट्रीय सफलता है।

फ्रांसीसी विफलता का चक्र: सत्ता का भ्रम

शाही स्थापना

राजा और कुलीनों द्वारा
धन लगाना।

मंत्रिस्तरीय हस्तक्षेप

मंत्रियों की मांगों और शाही
राजस्व की आवश्यकताओं
को प्राथमिकता।

दिवालियापन

1719 के 'एक्ट ऑफ यूनियन'
द्वारा अंततः सभी संपत्तियों
की जब्ती।

विशेषाधिकारों में कटौती

कानून को दरकिनार कर
कंपनी के अधिकारों का हनन।

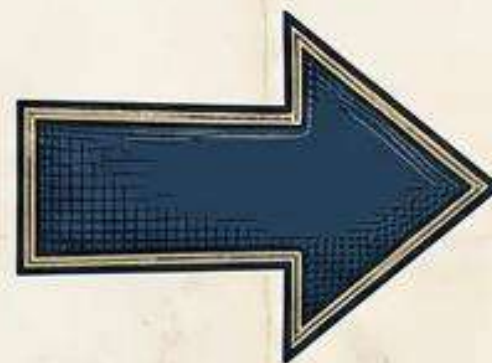
सबसे महान राजा या योग्य मंत्री भी
भी केवल सत्ता के बल पर व्यापार
स्थापित नहीं कर सकते।

धन का गुणक प्रभाव: इंग्लैंड का आर्थिक कायाकल्प

कंपनी से पहले

Land Rents: £6M
(Total Value: £72M)

National Stock: £17M



वर्तमान स्थिति

Land Rents: £25M
(Total Value: £625M)

National Stock: £262M

कुल राष्ट्रीय लाभ: £887 Millions

इंग्लैंड में सोने या चांदी की खदानें नहीं हैं; यह अपार संपत्ति पूरी तरह से व्यापार और वाणिज्य, विशेष रूप से ईआईसी की सफलता का परिणाम है।

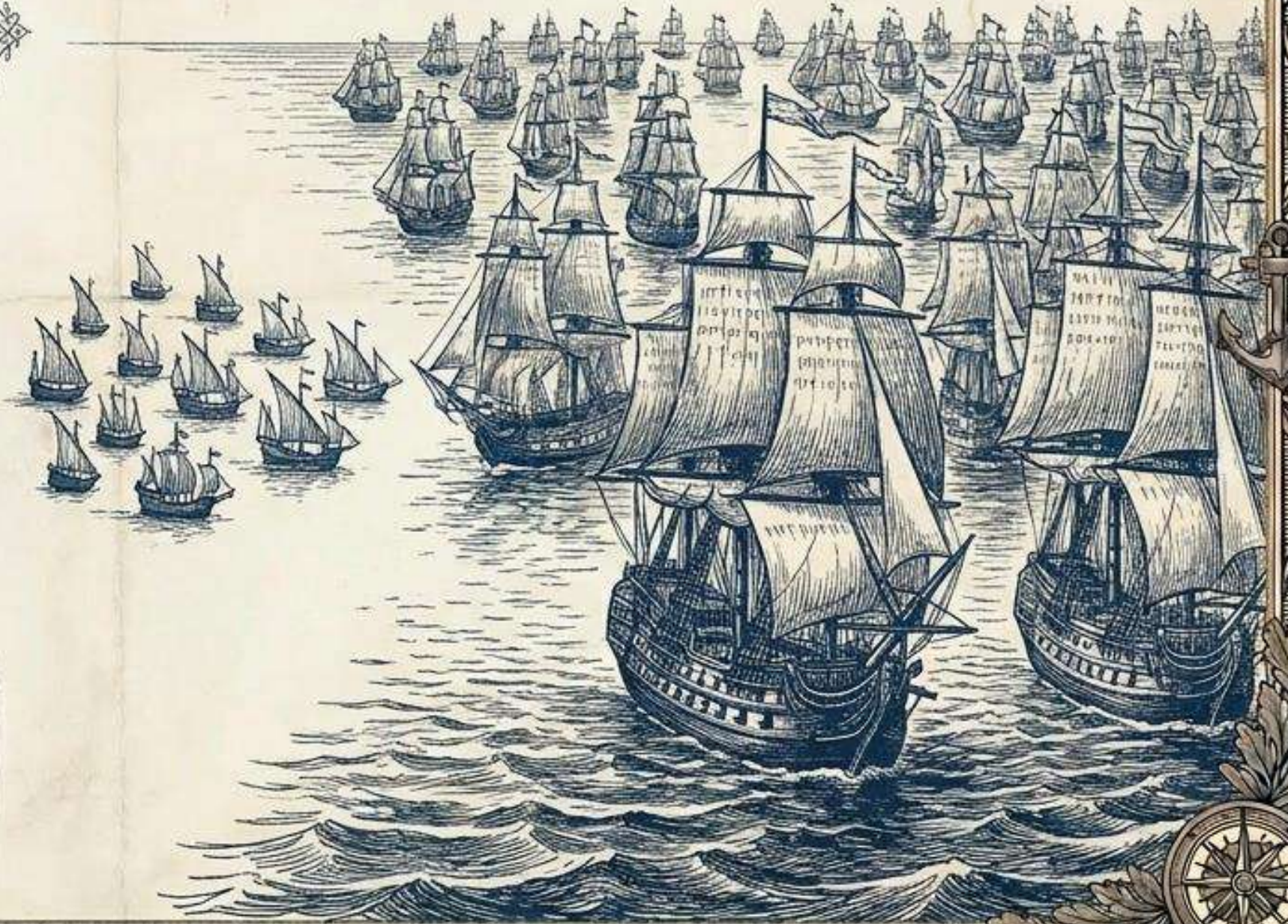
शाही नौसेना की नींव

- महारानी एलिजाबेथ का समय:
शाही नौसेना में केवल 13 जहाज थे।

- पहला विशाल जहाज: ईआईसी
ने इंग्लैंड का पहला 1200 टन का
जहाज बनाया।

- वर्तमान स्थिति: यूरोप में सर्वोपरि।

इतिहास गवाह है - व्यापार के पतन के साथ ही
नौसैनिक शक्ति भी डूब जाती है (रोमन,
विनीशियन, पुर्तगाली)। हमारी नौसेना हमारी
वाणिज्यिक सफलता का ही एक उपोत्पाद है।



अफवाहें और आरोप: ईआईसी पर राजनीतिक हमले

अप्रत्याशित सफलता ने ईआईसी को मंत्रियों के नियंत्रण और जांच का लक्ष्य बना दिया है।
जनता के बीच तीन प्रमुख आरोप फैलाए गए हैं:



आरोप 1: कंपनी ने भारत के 'वैध राजकुमारों' को लूटा है।



आरोप 2: कंपनी को पिछले युद्ध के खर्चे के लिए सरकार को भुगतान करना चाहिए।



आरोप 3: कंपनी कानूनी रूप से क्षेत्रीय राजस्व नहीं रख सकती।

अगले पृष्ठों में इन आरोपों का ऐतिहासिक तथ्यों के साथ खंडन किया गया है।

मिथक 1: 'वैध राजकुमारों' का भ्रम

Chain of Usurpation



ये नवाब वैध शासक नहीं, बल्कि हिंसक क्रूर तानाशाह थे।

मिथक 2: युद्ध के खर्च का बोझ

फ्रांसीसी रणनीति

फ्रांसीसी कंपनी राज्य का एक 'इंजन' थी, जिसका उद्देश्य युद्ध (1744) के दौरान ब्रिटिश व्यापार को नष्ट करना था।

कंपनी का योगदान

ईआईसी की सेनाओं ने न केवल मद्रास की रक्षा की, बल्कि फ्रांसीसियों को खदेड़ा और पांडिचेरी तथा मनीला को जीतने में सरकार की मदद की।



कंपनी ने एक साझा दुश्मन के खिलाफ राष्ट्र की रक्षा की। किसी अन्य निजी संस्था ने देश के लिए इतना बड़ा योगदान नहीं दिया है।

मिथक 3: क्षेत्रीय राजस्व की वैधता

बंबई

राजा चार्ल्स द्वितीय द्वारा प्रदान किया गया। यह उनकी रानी के दहेज का हिस्सा था।

राजस्व अधिकार

इनसे उत्पन्न £40,000 प्रति वर्ष का राजस्व पूरी तरह से कानूनी और निजी संपत्ति है।

कलकत्ता और मद्रास

लंबे समय से कानूनी कब्जे में, शांति संधियों और रक्षात्मक अधिकारों द्वारा सुरक्षित।

निजी संपत्ति को हमेशा पवित्र माना गया है; इसे जब्त करने का कोई कानूनी आधार नहीं है।

राष्ट्र के बहीखाते में ईआईसी का मूल्य

ईआईसी का प्रत्यक्ष भुगतान

- £400,000 प्रति वर्ष का सीधा भुगतान।
- £1.2M से £2M प्रति वर्ष का राष्ट्रीय लाभ।

राष्ट्रीय ऋण से बचाव

- यह £400,000 का भुगतान £6.3 करोड़ के राष्ट्रीय ऋण के ब्याज को कवर करता है।



कंपनी के धन को लूटने का कोई भी प्रयास सीधे
राष्ट्रीय खजाने और सार्वजनिक ऋण को खतरे में डालेगा।

निष्कर्ष: संपत्ति की सुरक्षा ही साम्राज्य की सुरक्षा है



Page.	Synthesis	March.
	• व्यापार राज्य की शक्ति का मूल है, लेकिन यह मंत्रियों के आदेश पर नहीं चलता। • अंग्रेजों ने तब तक असाधारण प्रगति की है, जब तक उन्होंने डचों की तरह निजी संपत्ति और विशेषाधिकारों का सम्मान किया है। • फ्रांस की तरह कंपनी को एक 'सरकारी मशीन' में बदलने का अर्थ होगा राष्ट्रीय संपत्ति का विनाश।	

संसद का कर्तव्य ईआईसी पर कब्जा करना नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करना है।